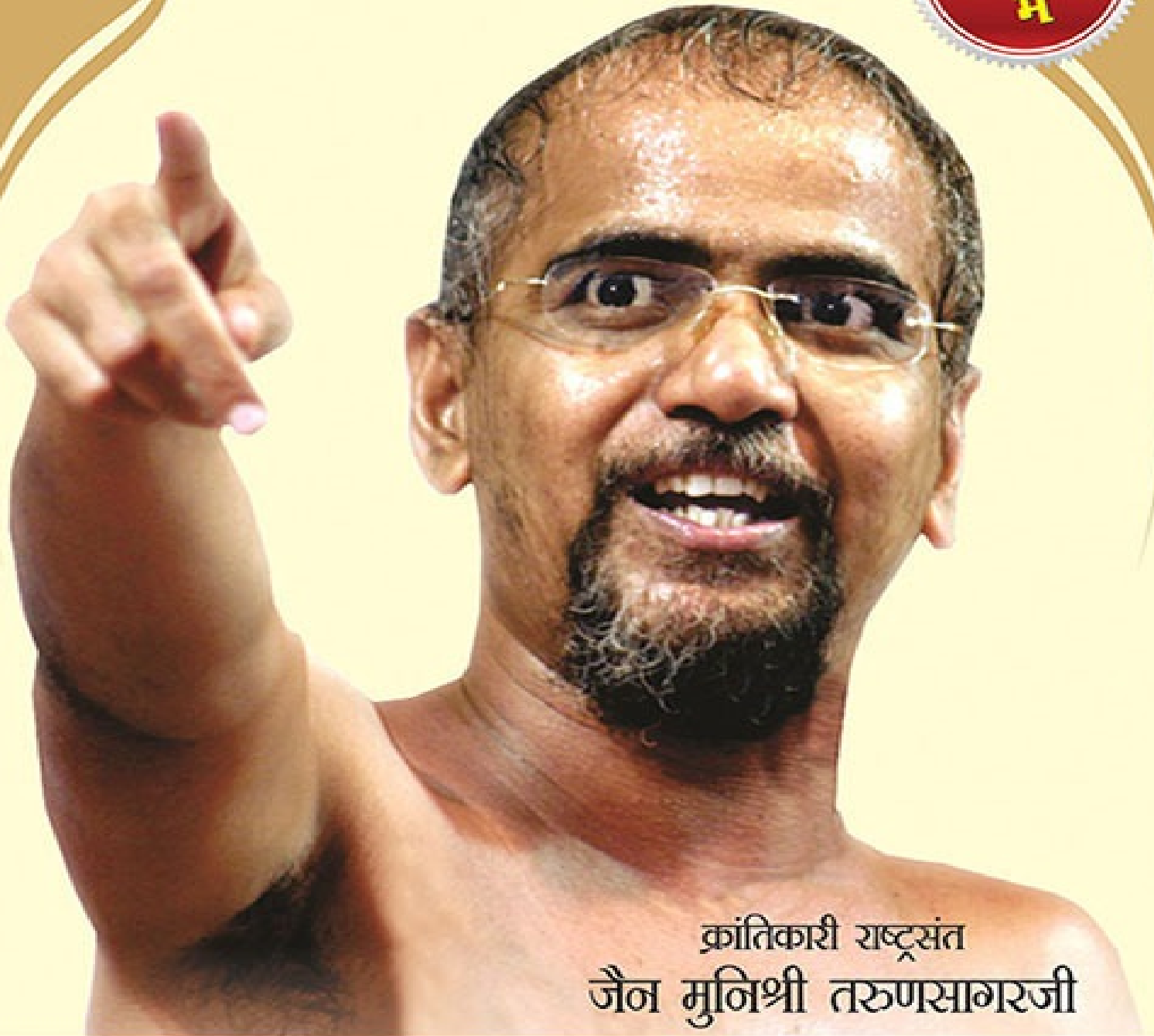




मुनिश्री तरुणसागरजी के चुने हुए कड़वे-प्रवचनों का संकलन

# कड़वे प्रवचन

14  
भाषाओं  
में



क्रांतिकारी राष्ट्रसंत  
जैन मुनिश्री तरुणसागरजी



# कड़वे प्रवचन

देश दुनिया में अपने 'कड़वे-प्रवचनों' के लिए विख्यात  
क्रांतिकारी राष्ट्रसंत जैनमुनिश्री तरुणसागरजी की नसीहतें

मुनिश्री के 2004 से 2014 तक गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, छत्तीसगढ़,  
मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा व दिल्ली  
प्रवास के दौरान सत्संगों में प्रदत्त कड़वे-प्रवचन।  
बहुचर्चित पुस्तक 'कड़वे-प्रवचन' के  
भागों के स्वर्णिम सूत्रों का  
अपूर्व संकलन।



## डायमंड बुक्स

eISBN: 978-81-2881-903-2

© लेखकाधीन

प्रकाशक : डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.

X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II  
नई दिल्ली-110020

फोन: 011-41611861

फैक्स: 011-41611866

ई-मेल: [ebooks@dpb.in](mailto:ebooks@dpb.in)

वेबसाइट: [www.diamondbook.in](http://www.diamondbook.in)

संस्करण: : 2014

**KADVE PRAVACHAN**

By - Dr. Jainmunishri Tarunsagar

## भूमिका

# मुनिश्री तरुणसागर सदियों तक याद किए जाएंगे

क्रांतिकारी राष्ट्रसंत मुनिश्री तरुणसागर जी के विचारों से बनी यह कति 'कड़वे प्रवचन' को प्रस्तुत करते हुए भीतर से मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

मुनिश्री तरुणसागर कौन है? एक जैन संत जिसने भगवान महावीर को चौराहे पर लाने का शंखनाद करके हलचल मचा दी या एक ऐसे संत जिनके प्रवचनों में जैन से कई गुना ज्यादा अजैन उमड़ते हैं और उनको राष्ट्रसंत की पदवी दे देते हैं। एक महान वक्ता, जिनकी वाणी से कभी आग तो कभी शीतलता बरसती है और सीधा हृदय को छूती है। कोई चमत्कारी महापुरुष, जिनका सान्निध्य लेने के लिए शीर्ष राजनीतिज्ञ और कलाकार खिंचे चले आते हैं या एक ऐसे व्यक्ति जिनका जन्म ही गिनीज विश्व रिकार्ड और लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड जैसे कीर्तिमान बनाने हेतु हुआ है। कौन है मुनिश्री तरुणसागर, ये समझने में उम्र निकल जाएगी।

मेरा परिचय मुनिश्री से उनके छत्तीसगढ़ प्रवास के दौरान एक लेखक और मोटिवेशनल स्पीकर के रूप में हुआ। तब तक मेरी छः बेस्टसेलर कृतियां 12 भाषाओं में प्रकाशित हो चुकीं थीं और लाखों लोग मेरे सेमिनारों में हिस्सा ले चुके थे। सच कहूं तो संतों के पास आना-जाना मेरा न के बराबर था, लेकिन मुनिश्री में कुछ खास बात थी। उनके छत्तीसगढ़ प्रवास के दौरान मैं उनको सुनने गया। विशाल स्टेज, 25-30 हजार श्रोताओं की भीड़, राजकीय अतिथि होने का ताम-झाम जैसी चीजों से मैं चौंक गया। मन में आया कि कुछ तो बात है। फिर जो स्टेज पर आवाज गरजना शुरू हुई तो तालियों ने रुकने का नाम नहीं लिया। मैं चारों तरफ देख रहा था। बच्चे, युवा, बुजुर्ग, जैन, अजैन, समृद्ध, हर आदमी कभी तालियां बजाता तो कभी सर झुकाता, तो कभी उद्वेलित होता। उस दिन की जबरदस्त यादें लेकर मैं लौट आया।

फिर मुनिश्री के साथ बहुत वक्त बिताने का सौभाग्य मिला। मैंने मुनिश्री के साथ छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के निवास पर कुछ समय बिताया। जितना मुनिश्री के करीब आया, उतना ही और ज्यादा प्रभावित हुआ। कम उम्र में दीक्षा ग्रहण करने के कारण स्कूली शिक्षा भी ठीक से नहीं हो पाई, लेकिन अक्सर वो ऐसी बात बोल जाते हैं कि किसी कॉलेज के प्रोफेसर की डिग्रियां भी उनके ज्ञान के आगे, फीकी पड़ जाती हैं। मैं अक्सर उनसे कहता हूँ कि आप कई एमबीए धारियों पर अकेले भारी हैं। वो जब किसी कार्यक्रम की योजना बनाते हैं तो उनकी प्लानिंग, प्रबंधन क्षमता और विजन देखकर आपको लगेगा मानो कि किसी विख्यात मल्टीनेशनल कंपनी का सीइओ तैयारी कर रहा हो। मुनिश्री तरुणसागर कोई छोटा सपना देख ही नहीं सकते हैं। वो हाथ भी लगा देंगे तो कार्य अपने आप शिखर पर पहुंच जाएगा। कम शब्दों में दमदार बात कहना और भीतर तक झंझोड़ कर रख देना, यह कला मुनिश्री के रोम-रोम में भरी है।

उनके प्रशंसकों ने उनके नाम पर तरुण क्रांति पुरस्कार की स्थापना की और मुझे राष्ट्रीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी। गत चार वर्षों में यह पुरस्कार डॉ. किरण बेदी, पूज्य बाबा रामदेव जी, श्रीमती मेनका गांधी, पूज्य श्री प्रणव पंडया जी, श्री रमेश चंद्र जी अग्रवाल, श्री गुलाब कोठारी जी, श्री वीरेन्द्र हेगड़े जी, श्री शांतिलाल जी मुथा जी जैसी भारत की दिग्गज हस्तियों को दिया जा चुका है। उनका नाम जुड़ा होने से यह पुरस्कार भी शिखर पर पहुंच गया है। ये हस्तियां सिर्फ मुनिश्री की वजह से पुरस्कार लेने अलग-अलग शहरों में स्वयं व्यक्तिगत रूप से उपस्थित हुईं। इन हस्तियों को पुरस्कार देने का सौभाग्य मिलना भी हमारे लिए गर्व की बात थी।

मैं जब उनके साथ बैठता हूँ तो हर पल सतर्क रहता हूँ। जाने कब कहां से एक अद्भुत विचार या आइडिया उनके मुंह से निकल आए, कोई नहीं जानता। उनके पास बैठने का भी अलग आनंद होता है। कभी बाल सुलभ

चंचलता, कभी गंभीर विचारक, कभी समाज सुधारक, कभी दबंग प्रशासक, जाने वो कौन सा रूप दिखा दें, कोई नहीं जानता। बहुत जिद्दी हैं वो, जो ठान लें तो फिर कोई रोक नहीं सकता। इसलिए वो दुनिया के बड़े-से-बड़े काम सोच भी लेते हैं और कर के भी दिखा भी देते हैं।

कभी कोई उनकी कबीर से तुलना करता है तो कोई अरस्तू से। कोई ओशो से तुलना करता है तो कोई किसी और से। मैं किसी से उनकी तुलना नहीं करना चाहता। मैं चाहता हूँ कि आने वाला इतिहास उनको क्रांतिकारी संत तरुणसागर के रूप में ही जाने। हर युग में कुछ महान हस्तियां हुई हैं जिनको सदियों तक याद किया जाएगा। मुनिश्री तरुणसागर इस युग की ऐसी ही एक हस्ती है।

मुनिश्री तरुणसागर की यह क्रांतिकारी पुस्तक कड़वे प्रवचन-2014 में 14 भाषाओं में एक साथ, एक दिन और एक मंच से रिलीज हो रही है तो वह क्षण भारत के प्रकाशकीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षर में दर्ज होगा।

मैं सभी पाठकों से कहना चाहता हूँ कि इस कृति में दिया गया हर विचार एक शास्त्र है। मुनिश्री के विचारों को धीरे-धीरे पढ़े, ज़िंदगी में उतारें और आगे बढ़ें। हर विचार में इतनी ताकत है कि वह आपका जीवन बदल सकता है। यह पुस्तक आपको उद्वेलित करके जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के शिखर पर पहुंचने में मदद करें, यह मेरी मंगल कामना है। मुनिश्री तरुणसागर जी को शत-शत नमन के साथ....

– डॉ. उज्ज्वल पाटनी  
अंतर्राष्ट्रीय ट्रेनर एवं मोटिवेशनल स्पीकर  
सफल वक्ता सफल व्यक्ति, पावर थिंकिंग  
और जीत या हार के प्रख्यात लेखक  
[www.ujjwalpatni.com](http://www.ujjwalpatni.com)  
[training@ujjwalpatni.com](mailto:training@ujjwalpatni.com)

## दो शब्द

मुनिश्री तरुणसागर जी जैन परम्परा के सुप्रसिद्ध मुनि हैं। मुनिश्री की स्वीकार्यता सिर्फ जैनियों में नहीं, वरन इतर जाति और धर्म के लोगों में भी है। वे साधारण संत नहीं हैं, बड़े ही विद्रोही और क्रांतिकारी संत हैं परम्परागत रूढ़िगत, दकियानूसी उनका व्यक्तित्व नहीं है। वे आग्नेय हैं, अग्नि जैसे प्रज्वलित हैं।

समाज के अक्स और नक्श को बदलने के लिए मुनिश्री तरुणसागरजी जैसे शख्स की जरूरत है, जो उसे लक्स की तरह धोकर साफ स्वच्छ कर सके।

‘कड़वे-प्रवचन’ का एक-एक सूत्र हीरो से भी तौलो तो वजनी है। ‘कड़वे- प्रवचन’ के सूत्र इतने धारदार हैं कि सीधे कलेजे में धंसते जाते हैं। हल्के-फुल्के और चुलबुले अंदाज में लिखे गये ये सूत्र विकृतियों और विद्रूपताओं की बखिया उधेड़ कर रख देते हैं। विचारों में पैनापन है, भाषा में उनके व्यक्तित्व जैसा ही बिंदासपन है, कहने को ये ‘कड़वे-प्रवचन’ है, मगर मेरा यह मानना है कि इनमें अद्भुत मिठास है। मुनिश्री की वाणी में जितना माधुर्य है, अन्यत्र दुर्लभ है। यह मेरा खुद का अनुभव है। मैं पिछले कई वर्षों से मुनिश्री की सेवा में हूँ। उनकी मुझ पर बड़ी कृपा रही है।

‘कड़वे-प्रवचन’ का यह विशिष्ट भाग है। इसमें मुनिश्री द्वारा गत वर्षों में अपने प्रवास के दौरान दिए गए प्रवचनों का सार-संग्रह है। कड़वे-प्रवचन की लोकप्रियता का अंदाज आप इसी बात से लगा सकते हैं कि इसका कई भाषा में अनुवाद हो चुका है और वह पूरे देश में पढ़ी जा रही है।

इस पुस्तक को पढ़ते समय बस इतना ख्याल रखना है कि दवाई और सच्चाई हमेशा कड़वी होती है। हमारी कोशिश यही होनी चाहिए कि मुनिश्री के विचार जिगर-जिगर और घर-घर तक पहुंचे, इसी मंगल कामना के साथ।

– रमेशचंद्र अग्रवाल  
चेयरमैन, दैनिक भास्कर ग्रुप

## शुभकामना और शुभाशीष

श्रमण संस्कृति में आध्यात्मिक अनुश्रुति से सम्पन्न अनेक संत हुए जिन्होंने युग को प्रभावित किया, जैसे आचार्य पुष्पदंत, आचार्य भूतबली, आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य समंतभद्र। ये जैन परम्परा में सर्वोच्च चिन्तक माने जाते हैं, आज उसी परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए मुनिश्री तरुणसागर प्रयत्नशील हैं।

मुनि तरुणसागरजी के चिन्तन-मनन से कोई भी विषय अछूता नहीं है चाहे आदर्श गृहस्थाश्रम, ऐहिक समृद्धि, देश की व्यवस्था, लोक हितकारी राज्य शासन-प्रशासन, शिक्षा कैसी हो? आदि जैसे गूढ विषयों को मधुर चिन्तन की चाशनी में डुबोकर जन-जन तक पहुंचा रहे हैं। युग परिवर्तन और बदलते हुए अंतर्राष्ट्रीय परिवेश को शिक्षा देने में, समझाने में तरुणसागर जी प्रेरक सिद्ध हुए हैं। सम-सामयिक पीढ़ी को संबोधन करने में, उनका प्रतिनिधित्व करने में तरुणसागर जी की क्षमता अद्वितीय है।

इस पृथ्वी पर एक साधक को मिठास का साधन मिलता है तो सबको उस स्वाद की प्यास पैदा होने लगती है। एक साधक में ज्ञान का प्रकाश होता है तो असंख्य लोगों के जीवन में उसकी किरणें उतरने लगती हैं। यही कारण है उसका आलोक विश्व को कोने-कोने तक पहुंचा रहा है और उस प्रवचनामृत का रसपान करने वाले क्या राजनेता, क्या संत, क्या पंडित, क्या ज्ञानी, क्या पादरी उन सबका एक वैश्विक समारोह बन गया है, जो आज साम्प्रदायिक कटुता भुलाकर उस 'कड़वे प्रवचन' की मिठास लेने जा रहे हैं।

आखिर क्या है उस 'कड़वे प्रवचन' में? एक-एक शब्द में अंगारे छिपे हैं, इसलिए 'कड़वे प्रवचन' हैं। आग में जलन है, लेकिन प्रकाश भी है, पकाने का सामर्थ्य भी है। जरा-सी चिंगारी तुम्हारे जीवन में गिरे तो तुम भी भभक उठ सकते हो और व्यर्थ को जलाकर परमात्मा को निखार सकते हो। ऐसी टकराहट से ज्योति का जन्म होता है। समय और संस्कृति के बीच में भटकती मानवता के पित्त-ज्वर को निकालने के लिए 'कड़वे प्रवचन' की औषधि आवश्यक है।

प्रस्तुत पुस्तक का एक भाग कुछ वर्षों पूर्व प्रकाशित हुआ था, जिसे पूरे देश में सराहा गया और डेढ़ वर्ष की अल्पावधि में ही जिसकी लाखों प्रतियों की रिकार्ड बिक्री हुई। यह जैन इतिहास में विश्व रिकार्ड है। यह 'कड़वे प्रवचन' का यह समग्र भाग है, यही विकास का लक्षण है। हर नया सूरज नए विकास का साक्षी बनकर मन-आंगन में उदित होता है 'कड़वे प्रवचन' का सूरज आपके नेत्र-उन्मूलन में सहायक होगा। यही शुभकामना और शुभाशीष है।

– आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी

## दिगम्बर मुनि : एक परिचय

मुनिश्री तरुणसागरजी दिगम्बर जैन मुनि हैं। दिगम्बर शब्द का अर्थ होता है, दिग+अम्बर अर्थात् दिशाएं ही जिनके वस्त्र हैं। दिगम्बर मुनि होना कोई बच्चों का खेल नहीं है। यह आश्चर्य है। केवल वस्त्र छोड़ देने और नग्न हो जाने से कोई दिगम्बर मुनि नहीं हो जाता। दिगम्बर मुनि होने के लिए हर साधक को 28 महासंकल्पों से गुजरना पड़ता है, जिन्हें जैन धर्म में मुनि के 28 मूल गुण कहे जाते हैं। जैन मुनि आचरण से जीवंत देवता हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन इतना अधिक तप, त्याग और साधनापूर्ण है, जिसकी कोई कल्पना नहीं नहीं कर सकता।

आपको नहीं पता होगा कि एक दिगम्बर मुनि 24 घंटे में केवल एक बार अन्न-जल ग्रहण करता है, वह भी खड़े-खड़े, अपनी दोनों अंजुली का 'करपात्र' बनाकर। इसके बाद वह कैसी भी स्थिति आये तब भी पानी की एक बूंद भी ग्रहण नहीं करता। सोचिए भीषण गर्मी के दिनों में जब हमें आपको हर दस मिनट में प्यास लगती है तब दिगम्बर मुनि दो-दो घंटे प्रवचन में बोलकर 20-20 किमी., पद विहार करके भी अपने इस संकल्प को निभाता है। कितनी कठिन साधना है।

इतना ही नहीं, वह अपने बालों को किसी सैलून में जाकर नहीं कटवाता है, बल्कि हर चार माह में अपने सिर, दाढ़ी और मूँछ के बालों को हाथों से उखाड़कर फेंकता है। इसे जैन शास्त्रों में 'केशलोच' कहते हैं। जरा आप अपने चार बाल उखाड़कर देखिए तो समझ में आ जाएगा कि दिगम्बर मुनि की साधना कितनी कठिन है। सारी जिंदगी पद विहार करना, हाड़ कंपा देने वाली ठंड हो या भीषण गर्मी हमेशा ही नग्न रहना, मन और इन्द्रियों को जीतकर बालकवत् निर्विकार बनना, कभी भी स्नान नहीं करना, दंत मंजन नहीं करना (वह भोजन के समय ही एक बार मुख में पानी देते हैं) अखंड ब्रह्मचर्य व्रत पालना, रात्रि में मौन रखना, अपने पास पिच्छी (मयूरपंखी), कमंडल और शास्त्र इन तीनों चीजों (उपकरणों) के अलावा और कुछ भी नहीं रहना, आदि उनके नियम होते हैं, जिसे देखकर / सुनकर आदमी को विश्वास होना ही मुश्किल है। बंधुओं! दिगम्बर मुनि केवल नग्न ही नहीं होता, बल्कि उनके जीवन को देखने के बाद आपको भी लगेगा कि दिगम्बर मुनि जैसी साधना दुनिया में किसी के पास नहीं है।

दिगम्बर मुनि का जीवन कितना कठिन है, इस बात का अंदाज आप इसी बात से लगा लें कि हिन्दुस्तान में करीब 1 करोड़ जैन हैं, उनमें सिर्फ 500 दिगम्बर मुनि हैं। क्रान्तिकारी राष्ट्रसंत मुनिश्री तरुणसागर जी ने 13 वर्ष की सुकुमार वय में जैन दीक्षा ली थी, तभी से उपर्युक्त सभी नियमों का पालन कर रहे हैं और दुनिया को सच्ची राह बता रहे हैं। है ना आश्चर्य!